

ईरान-सऊदी प्रतिद्वंद्विता और शिया-सुन्नी राजनीति: पश्चिम एशिया की समकालीन भू-राजनीतिक संरचना का विश्लेषण

डॉ० सरवेज अली

राजनीति विज्ञान विभाग

इस्लामिया पी.जी. कॉलेज, देवबंद,

सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 17-04-26
Approved: 30-06-26

डॉ० सरवेज अली

ईरान-सऊदी प्रतिद्वंद्विता और
शिया-सुन्नी राजनीति: पश्चिम
एशिया की समकालीन भू-
राजनीतिक संरचना का विश्लेषण

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.05, Pg. 023-028

Similarity Check: 02%

Online available at
Online available at
[https://anubooks.com/special-
issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-
july-2026](https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026)

DOI: [https://doi.org/10.31995/
jgv.2026.v17iSI07.005](https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.005)

सारांश

पश्चिम एशिया विश्व राजनीति का अत्यंत संवेदनशील एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र तेल संसाधनों, धार्मिक महत्व, वैश्विक व्यापार मार्गों तथा सामरिक शक्ति संतुलन के कारण अंतरराष्ट्रीय राजनीति का केंद्र बना हुआ है। वर्तमान समय में ईरान और सऊदी अरब के मध्य बढ़ती प्रतिद्वंद्विता ने पश्चिम एशिया की राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है। यह संघर्ष केवल दो राष्ट्रों के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा नहीं है, बल्कि शिया-सुन्नी धार्मिक पहचान, वैचारिक संघर्ष, क्षेत्रीय नेतृत्व तथा वैश्विक शक्तियों के हितों से भी जुड़ा हुआ है।

1979 की ईरानी इस्लामी क्रांति के पश्चात पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला। ईरान ने स्वयं को शिया समुदायों के नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया, जबकि सऊदी अरब ने सुन्नी इस्लामी विश्व के संरक्षक की भूमिका को और अधिक सुदृढ़ किया। परिणामस्वरूप सीरिया, यमन, इराक तथा लेबनान जैसे देशों में परोक्ष युद्धों और सांप्रदायिक संघर्षों की स्थिति उत्पन्न हुई।

यह शोध-पत्र ईरान-सऊदी प्रतिद्वंद्विता के ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा भू-राजनीतिक आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही अमेरिका, रूस और चीन जैसी वैश्विक शक्तियों की भूमिका का भी अध्ययन किया गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि वर्तमान पश्चिम एशियाई संकट धार्मिक संघर्ष की अपेक्षा राजनीतिक व सामरिक हितों से अधिक प्रेरित है।

मुख्य शब्द: शिया-सुन्नी राजनीति, ईरान, सऊदी अरब, पश्चिम एशिया, भू-राजनीति, शक्ति संतुलन, इस्लामी राजनीति।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

पश्चिम एशिया का क्षेत्र सदैव से विश्व राजनीति का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। एशिया, यूरोप और अफ्रीका के मध्य स्थित यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। तेल एवं प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार, स्वेज नहर, होर्मुज जलडमरूमध्य तथा धार्मिक स्थलों की उपस्थिति इसे वैश्विक राजनीति का केंद्र बनाती है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिम एशिया में दो प्रमुख शक्तियाँ उभरकर सामने आईं ईरान और सऊदी अरब। दोनों देशों ने इस्लामी विश्व में नेतृत्व स्थापित करने का प्रयास किया। ईरान शिया इस्लाम का प्रमुख केंद्र है, जबकि सऊदी अरब स्वयं को सुन्नी इस्लामी जगत का नेतृत्वकर्ता मानता है।

यद्यपि शिया और सुन्नी विभाजन का इतिहास प्रारंभिक इस्लामी काल से जुड़ा हुआ है, किन्तु आधुनिक राजनीति में इसका उपयोग सत्ता, प्रभाव और भू-राजनीतिक हितों की पूर्ति हेतु किया जाने लगा। 1979 की ईरानी इस्लामी क्रांति ने इस प्रतिद्वंद्विता को और अधिक तीव्र कर दिया। ईरान ने पश्चिमी प्रभाव का विरोध करते हुए इस्लामी क्रांति के सिद्धांतों का विस्तार करने का प्रयास किया, जबकि सऊदी अरब ने अमेरिका और पश्चिमी देशों के सहयोग से अपनी स्थिति मजबूत की।

समकालीन पश्चिम एशिया के अनेक संघर्ष जैसे सीरिया का गृहयुद्ध, यमन संकट, इराक की अस्थिरता तथा लेबनान की राजनीतिक स्थिति ईरान और सऊदी अरब की प्रतिस्पर्धा से प्रभावित हैं। इस प्रतिद्वंद्विता ने पूरे क्षेत्र में सांप्रदायिक तनाव, आतंकवाद, राजनीतिक अस्थिरता और मानवीय संकट को जन्म दिया है।

यह अध्ययन पश्चिम एशिया में बदलते शक्ति संतुलन तथा शिया-सुन्नी राजनीति के भू-राजनीतिक प्रभावों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शिया-सुन्नी विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस्लाम में शिया और सुन्नी विभाजन की शुरुआत पैगम्बर हजरत मोहम्मद की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार विवाद से हुई। पैगम्बर की मृत्यु के बाद मुस्लिम समुदाय के समक्ष नेतृत्व का प्रश्न उत्पन्न हुआ। एक समूह का मत था कि नेतृत्व पैगम्बर के परिवार, विशेष रूप से हजरत अली को मिलना चाहिए। यही समूह आगे चलकर "शिया" कहलाया।

दूसरा समूह समुदाय द्वारा चयनित खलीफा का समर्थन करता था। इस समूह ने अबूबक्र को पहला खलीफा स्वीकार किया और यही समूह आगे चलकर "सुन्नी" कहलाया।

680 ईस्वी में करबला की घटना ने इस विभाजन को स्थायी रूप प्रदान किया। इमाम हुसैन और उनके साथियों की शहादत शिया समुदाय की धार्मिक पहचान का केंद्रीय तत्व बन गई।

समय के साथ-साथ यह विभाजन धार्मिक मतभेदों से आगे बढ़कर राजनीतिक संघर्ष का रूप लेने लगा। विभिन्न इस्लामी साम्राज्यों ने अपनी-अपनी विचारधाराओं को बढ़ावा दिया। ईरान में सफवी साम्राज्य ने शिया मत को राज्य धर्म बनाया, जबकि उस्मानी साम्राज्य सुन्नी विचारधारा का प्रमुख केंद्र बना।

आधुनिक युग में यह विभाजन राजनीतिक हितों की पूर्ति का माध्यम बन गया। अनेक देशों में धार्मिक पहचान का उपयोग सत्ता संघर्ष के लिए किया गया।

ईरानी इस्लामी क्रांति और उसका प्रभाव

1979 की ईरानी इस्लामी क्रांति पश्चिम एशिया के इतिहास की एक निर्णायक घटना थी। आयतुल्लाह रुहोल्लाह खोमैनी के नेतृत्व में शाह मोहम्मद रजा पहलवी की सत्ता समाप्त हुई और ईरान में इस्लामी गणराज्य की स्थापना हुई।

यह क्रांति केवल राजनीतिक परिवर्तन नहीं थी, बल्कि पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध एक वैचारिक आंदोलन भी थी। ईरान ने अमेरिका विरोधी नीति अपनाई और स्वयं को समस्त मुस्लिम विश्व, विशेषकर शिया समुदायों का संरक्षक घोषित किया।

ईरान की क्रांतिकारी विचारधारा ने पश्चिम एशिया के अनेक देशों में प्रभाव डाला। लेबनान में हिजबुल्लाह, इराक के शिया संगठन तथा सीरिया की असद सरकार को ईरान का समर्थन प्राप्त हुआ।

सऊदी अरब ने इस क्रांति को अपने लिए चुनौती माना। सऊदी नेतृत्व को भय था कि ईरानी क्रांति की विचारधारा अरब देशों में राजशाही व्यवस्था को अस्थिर कर सकती है। परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच वैचारिक और राजनीतिक संघर्ष तीव्र होता गया।

ईरान ने "प्रतिरोध की धुरी" की नीति अपनाई, जबकि सऊदी अरब ने अमेरिका एवं खाड़ी देशों के साथ गठबंधन को मजबूत किया।

सऊदी अरब की भूमिका और वहाबी विचारधारा

सऊदी अरब की राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था वहाबी विचारधारा पर आधारित है। वहाबियत एक रूढ़िवादी सुन्नी आंदोलन है जिसकी स्थापना अठारहवीं शताब्दी में मुहम्मद इब्न अब्दुल वहाब ने की थी।

तेल संपदा के कारण सऊदी अरब ने वैश्विक स्तर पर वहाबी विचारधारा का व्यापक प्रचार किया। मस्जिदों, मदरसों और धार्मिक संस्थानों को आर्थिक सहायता देकर उसने सुन्नी प्रभाव को बढ़ावा दिया।

सऊदी अरब स्वयं को इस्लाम के दो पवित्र शहरों मक्का और मदीना का संरक्षक मानता है। इसी कारण वह मुस्लिम दुनिया में नेतृत्व स्थापित करने का प्रयास करता है।

ईरान और सऊदी अरब के बीच संघर्ष का मूल कारण यही क्षेत्रीय नेतृत्व की प्रतिस्पर्धा है। दोनों देश स्वयं को इस्लामी विश्व का वास्तविक प्रतिनिधि सिद्ध करना चाहते हैं।

पश्चिम एशिया के संघर्षों में शिया-सुन्नी राजनीति

सीरिया का गृहयुद्ध

सीरिया का संघर्ष पश्चिम एशिया की राजनीति का सबसे जटिल संकट बन चुका है। 2011 में आरंभ हुए गृहयुद्ध में ईरान ने राष्ट्रपति बशर अल-असद की सरकार का समर्थन किया, जबकि सऊदी अरब और अन्य खाड़ी देशों ने विद्रोही समूहों को सहायता प्रदान की।

असद सरकार 'अलावी' समुदाय से संबंधित है, जिसे शिया परंपरा के निकट माना जाता है। दूसरी ओर अधिकांश विद्रोही समूह सुन्नी समुदाय से जुड़े थे। परिणामस्वरूप संघर्ष ने सांप्रदायिक स्वरूप ग्रहण कर लिया।

रूस ने असद सरकार को सैन्य सहायता प्रदान की, जबकि अमेरिका ने कुछ विद्रोही गुटों का समर्थन किया। इससे सीरिया वैश्विक शक्तियों के संघर्ष का केंद्र बन गया। सीरिया का गृहयुद्ध समकालीन पश्चिम एशियाई राजनीति का सबसे जटिल और बहुआयामी संघर्ष माना जाता है। वर्ष 2011 में अरब स्प्रिंग आंदोलन की पृष्ठभूमि में प्रारंभ हुआ यह संकट धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय शक्ति संघर्ष का केंद्र बन गया। प्रारंभ में यह संघर्ष लोकतांत्रिक सुधारों और शासन परिवर्तन की मांग से जुड़ा हुआ था, किन्तु समय के साथ इसमें सांप्रदायिक राजनीति, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता तथा वैश्विक हस्तक्षेप शामिल होते गए।

ईरान ने सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद का खुलकर समर्थन किया। इसके पीछे केवल वैचारिक कारण नहीं थे, बल्कि सामरिक हित भी निहित थे। सीरिया, ईरान के लिए लेबनान स्थित हिजबुल्लाह संगठन तक पहुँच का महत्वपूर्ण मार्ग है। यदि असद सरकार कमजोर होती, तो ईरान का क्षेत्रीय प्रभाव भी प्रभावित होता। इसी कारण ईरान ने सीरिया को आर्थिक सहायता, सैन्य सलाहकार तथा रणनीतिक समर्थन प्रदान किया।

दूसरी ओर सऊदी अरब ने असद विरोधी सुन्नी गुटों को समर्थन देकर अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास किया। सऊदी नेतृत्व का मानना था कि यदि सीरिया में ईरान समर्थित शासन बना रहता है, तो पूरे पश्चिम एशिया में

ईरान की शक्ति और अधिक बढ़ जाएगी। परिणामस्वरूप सीरिया परोक्ष युद्ध का केंद्र बन गया, जहाँ स्थानीय संघर्ष के भीतर क्षेत्रीय शक्तियों की प्रतिस्पर्धा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यमन संकट

यमन का संघर्ष पश्चिम एशिया की राजनीति में ईरान और सऊदी अरब की प्रतिद्वंद्विता का सबसे संवेदनशील उदाहरण है। यह संघर्ष केवल सत्ता परिवर्तन का प्रश्न नहीं है, बल्कि क्षेत्रीय प्रभाव, सामरिक सुरक्षा तथा राजनीतिक नियंत्रण का भी विषय है।

यमन में हूती आंदोलन ने धीरे-धीरे राजनीतिक शक्ति प्राप्त की और राजधानी सना पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। सऊदी अरब ने हूती आंदोलन को ईरान समर्थित मानते हुए इसे अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा माना। इसके बाद सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन ने यमन में सैन्य अभियान प्रारंभ किया।

ईरान ने प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप से बचते हुए राजनीतिक और वैचारिक समर्थन प्रदान किया। दूसरी ओर सऊदी अरब ने व्यापक हवाई हमले तथा सैन्य रणनीति के माध्यम से हूती प्रभाव को सीमित करने का प्रयास किया।

यमन युद्ध का सबसे गंभीर प्रभाव वहां की जनता पर पड़ा। खाद्य संकट, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, आर्थिक अस्थिरता और व्यापक विस्थापन ने यमन को विश्व के सबसे बड़े मानवीय संकटों में बदल दिया। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों में बार-बार यह उल्लेख किया गया है कि इस युद्ध ने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है।

यमन का संघर्ष यह स्पष्ट करता है कि पश्चिम एशिया में शक्ति संतुलन की राजनीति किस प्रकार स्थानीय संघर्षों को अंतरराष्ट्रीय संकट में परिवर्तित कर देती है। यहाँ धार्मिक पहचान का उपयोग राजनीतिक और सामरिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया गया।

इराक की राजनीति

इराक पश्चिम एशिया की राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 2003 में अमेरिका द्वारा सद्दाम हुसैन की सत्ता समाप्त किए जाने के बाद इराक की राजनीतिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुआ। सद्दाम शासन के पतन के पश्चात शिया नेतृत्व को राजनीतिक शक्ति प्राप्त हुई, जिससे ईरान का प्रभाव बढ़ने लगा।

ईरान ने इराक के विभिन्न शिया संगठनों और राजनीतिक दलों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए। इससे माध्यम से उसने इराक में अपनी रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत किया। दूसरी ओर सऊदी अरब ने इसे क्षेत्रीय संतुलन के लिए चुनौती माना।

इराक में सांप्रदायिक तनाव धीरे-धीरे हिंसक संघर्ष में बदल गया। शिया और सुन्नी समुदायों के बीच अविश्वास बढ़ा तथा अनेक उग्रवादी संगठनों को भी इसी अस्थिरता से बल मिला। आईएसआईएस जैसे संगठनों का उदय भी राजनीतिक अस्थिरता और सांप्रदायिक विभाजन से जुड़ा हुआ था।

इराक की स्थिति यह दर्शाती है कि बाहरी हस्तक्षेप और आंतरिक विभाजन मिलकर किसी राष्ट्र की राजनीतिक संरचना को लंबे समय तक अस्थिर बना सकते हैं। वर्तमान समय में भी इराक पूर्ण रूप से स्थिर नहीं हो पाया है और वहाँ की राजनीति क्षेत्रीय शक्तियों के प्रभाव से प्रभावित रहती है।

लेबनान

लेबनान पश्चिम एशिया का ऐसा देश है जहाँ धार्मिक विविधता और राजनीतिक संरचना एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। यहाँ शिया, सुन्नी और ईसाई समुदायों के बीच सत्ता का बँटवारा किया गया है।

ईरान समर्थित हिजबुल्लाह संगठन लेबनान की राजनीति में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाता है। हिजबुल्लाह केवल एक सैन्य संगठन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर भी सक्रिय है। ईरान इसे क्षेत्रीय प्रतिरोध की रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है।

दूसरी ओर सऊदी अरब लेबनान के सुन्नी राजनीतिक दलों को समर्थन देता रहा है। परिणामस्वरूप लेबनान की राजनीति क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बन गई है।

लेबनान की आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता ने वहां की जनता के सामने गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। बार-बार सरकारों का गिरना, आर्थिक संकट और बाहरी हस्तक्षेप इस देश की स्थिरता को प्रभावित करते रहे हैं।

लेबनान का उदाहरण यह दर्शाता है कि जब क्षेत्रीय शक्तियाँ किसी देश की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप करती हैं, तब वहां स्थायी राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

सऊदी अरब और ईरान: प्रत्यक्ष संघर्ष से कूटनीतिक संवाद तक

लंबे समय तक प्रतिद्वंद्विता और तनाव की स्थिति रहने के बाद हाल के वर्षों में ईरान और सऊदी अरब के संबंधों में कुछ सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं। चीन की मध्यस्थता में दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की पुनः स्थापना एक महत्वपूर्ण घटना मानी गई।

यह परिवर्तन केवल कूटनीतिक पहल नहीं है, बल्कि बदलती वैश्विक राजनीति का संकेत भी है। पश्चिम एशिया के देशों को यह समझ आने लगा है कि निरंतर संघर्ष आर्थिक विकास और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए हानिकारक है। हालांकि दोनों देशों के बीच वैचारिक मतभेद अभी भी मौजूद हैं, फिर भी संवाद और सहयोग की संभावनाएँ बढ़ी हैं। यदि यह प्रक्रिया आगे बढ़ती है, तो पश्चिम एशिया में स्थिरता और शांति स्थापित होने की संभावना मजबूत हो सकती है।

अमेरिका

अमेरिका लंबे समय से सऊदी अरब का प्रमुख सहयोगी रहा है। तेल संसाधनों और सामरिक हितों के कारण अमेरिका ने सऊदी अरब को सैन्य और आर्थिक सहायता प्रदान की।

अमेरिका ईरान की परमाणु नीति और क्षेत्रीय प्रभाव को अपने हितों के लिए खतरा मानता है। इसी कारण दोनों देशों के संबंध तनावपूर्ण रहे हैं।

रूस

रूस के हस्तक्षेप ने इस संघर्ष को और अधिक जटिल बना दिया। रूस ने असद सरकार को सैन्य सहायता देकर अपनी वैश्विक शक्ति का प्रदर्शन किया, जबकि अमेरिका और यूरोपीय देशों ने विभिन्न विद्रोही समूहों को समर्थन दिया। इस प्रकार सीरिया केवल गृहयुद्ध का क्षेत्र न रहकर वैश्विक भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का मंच बन गया।

सीरिया संकट ने लाखों लोगों को विस्थापित किया तथा शरणार्थी समस्या को जन्म दिया। यह संघर्ष यह दर्शाता है कि धार्मिक पहचान और भू-राजनीतिक हित जब एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, तब किसी क्षेत्र की स्थिरता किस प्रकार प्रभावित होती है।

चीन

चीन पश्चिम एशिया में आर्थिक हितों के कारण सक्रिय हो रहा है। उसने ईरान और सऊदी अरब दोनों के साथ संतुलित संबंध बनाए हैं। हाल के वर्षों में चीन ने दोनों देशों के मध्य कूटनीतिक संवाद को प्रोत्साहित किया है।

भू-राजनीतिक विश्लेषण

ईरान-सऊदी प्रतिद्वंद्विता केवल धार्मिक संघर्ष नहीं है। इसके पीछे तेल संसाधनों पर नियंत्रण, सामरिक मार्गों की सुरक्षा, क्षेत्रीय नेतृत्व तथा वैश्विक शक्ति संतुलन जैसे कारक भी हैं।

होर्मुज जलडमरूमध्य विश्व ऊर्जा आपूर्ति का महत्वपूर्ण मार्ग है। ईरान इस क्षेत्र में सामरिक प्रभाव बनाए रखना चाहता है, जबकि सऊदी अरब अमेरिका के सहयोग से अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता है।

दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रीय समूहों को समर्थन देकर "प्रतिनिधि युद्ध" की नीति अपनाई है। इससे पश्चिम एशिया में अस्थिरता बढ़ी है।

शिया-सुन्नी पहचान का राजनीतिक उपयोग सामाजिक विभाजन और सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा देता है। परिणामस्वरूप आतंकवाद और कट्टरवाद को भी बल मिला है।

ईरान और सऊदी अरब की प्रतिद्वंद्विता पश्चिम एशिया की राजनीति का केंद्रीय तत्व बन चुकी है। यह संघर्ष धार्मिक मतभेदों से आगे बढ़कर भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का रूप ले चुका है।

शिया-सुन्नी विभाजन का उपयोग राजनीतिक और सामरिक हितों की पूर्ति हेतु किया जा रहा है। सीरिया, यमन, इराक और लेबनान जैसे देशों में चल रहे संघर्ष इस प्रतिद्वंद्विता के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

हालांकि हाल के वर्षों में दोनों देशों के बीच संवाद और कूटनीतिक प्रयास बढ़े हैं, फिर भी स्थायी शांति के लिए क्षेत्रीय सहयोग, धार्मिक सहिष्णुता और बाहरी हस्तक्षेप में कमी आवश्यक है।

पश्चिम एशिया की स्थिरता सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। अतः ईरान और सऊदी अरब को संघर्ष के स्थान पर सहयोग और संवाद की नीति अपनानी चाहिए।

संदर्भ

1. नासर, वैली (2010), शिया पुनर्जागरण, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
2. एस्पोसिटो, जॉन एल. (2012), इस्लाम और राजनीति, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. आर्मस्ट्रांग, करेन (2015), इस्लाम का इतिहास, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
4. हंटिंगटन, सैमुअल पी. (2004), सभ्यताओं का संघर्ष, नई दिल्ली, पेंगुइन बुक्स इंडिया।
5. लुईस, बर्नार्ड (2008), मध्य पूर्व का इतिहास, नई दिल्ली, ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. मैन्सफील्ड, पीटर (2011), मध्य पूर्व का राजनीतिक इतिहास, नई दिल्ली, मैकमिलन प्रकाशन।
7. गेल्विन, जेम्स (2016), आधुनिक पश्चिम एशिया, नई दिल्ली, रूटलेज इंडिया।
8. फुकुयामा, फ्रांसिस (2014), राजनीतिक व्यवस्था और पतन, नई दिल्ली, हार्पर कॉलिन्स।
9. दबाशी, हामिद (2013), ईरान: एक राजनीतिक अध्ययन, नई दिल्ली, सेज पब्लिकेशन।
10. अजामी, फवाद (2009), अरब विश्व की राजनीति, नई दिल्ली, पेंगुइन प्रकाशन।
11. हॉलिडे, फ्रेड (2005), अंतरराष्ट्रीय संबंध और मध्य पूर्व, नई दिल्ली, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. अरजोमंद, सईद अमीर (2010), ईरानी क्रांति और इस्लामी राजनीति, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड प्रकाशन।
13. लिंग, मार्क (2018), नवीन अरब संघर्ष, नई दिल्ली, पब्लिक अफेयर्स प्रकाशन।
14. हद्दाद, यवोन (2011), समकालीन इस्लाम और इतिहास की चुनौतियाँ, नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन।
15. कुमार, प्रभुदत्त (2019), पश्चिम एशिया की राजनीति, नई दिल्ली, ज्ञानदा प्रकाशन।
16. सिंह, आर.एस. (2020), अंतरराष्ट्रीय राजनीति और पश्चिम एशिया, जयपुर, यूनिवर्सिटी बुक हाउस।
17. शर्मा, वीरेन्द्र (2018), वैश्विक राजनीति और इस्लामी विश्व, नई दिल्ली, साहित्य भवन।
18. खान, मुजम्मिल (2021), शिया-सुन्नी संबंधों का राजनीतिक अध्ययन, अलीगढ़, एजुकेशनल बुक सर्विस।
19. अंसारी, मोहम्मद आरिफ (2017), इस्लाम और समकालीन विश्व राजनीति, लखनऊ, नमन प्रकाशन।
20. चौधरी, एस.के. (2022), पश्चिम एशिया का बदलता शक्ति संतुलन, नई दिल्ली, अटलांटिक पब्लिशर्स।